recommendations contained in the Twenty-second Report of the Committee on Food Corporation of India (Ministry of Agriculture—Department of Food).

——

12.07 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATAER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

REPORTED OVERLOADING OF PASSENGERS OF INDIAN AIRLINES FLIGHTS

श्री अटल बिहारी वाजपेयी :-(नई दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, मैं अविलम्बनीय लोकमहत्व के निम्नलिखित विषय की ओर पर्यटन और नागर विमानन मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि इस बारे में एक वक्तव्य दें ;

"इंडियन एयरलाइन्स की उड़ानों में सुरक्षा नियमों का उल्लंघन कर के क्षमता से अधिक यात्रियों को ले जाने के समाचार और इस संबंध में सरकार द्वारा की गई कार्यवाही ।"

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF TOURISM AND CIVIL AVIATIATION (SHRI KHURSHEED ALAM KHAN): An incident relating to the Indian Airlines having carried excess passengers on the sector Ranchi-Patna on 11th February, 1982 was brought to the notice of the Government. As already explained in response to the Starred Question No. 283 in the Lok Sabha on 12-3-82, in one of its flights Indian Airlines had carried 7 passengers in excess of its capacity over the sector Ranchi-Patna on B-737 operating flight IC-410 Calcutta /Ranchi/Patna /Lucknow/Delhi on 11th February, 1982. Two of the passengers were accommodated in the cockpit. Five other passengers were accommodated in the cabin. The preliminary investigations made into this incident revealed that the flight was inadvertantly over-booked ex-Ranchi due to an error by Traffic Assistant at Ranchii City Booking Office.

2. Disciplinary proceedings have been initiated by Indian Airlines against the erring staff. A senior officer of the Eastern Regional Office of the Indian Airlines is conducting the inquiry. Director General of Civil Aviation has also initiated proceedings under rule 77(c) of the Aircraft Rules, 1937. On receipt of the report necessary action will be taken.

3. The Director General of Civil Aviation conducted surprise inspections through his officers betwen 13th March, 1982 and 21st March, 1982 intended to cover various aspects of fair safety including any violation of safety norms by carriage of excess passengrs. Such inspections covered Lucknow, Patna, Bagdogra, Gauhati, Tezpur, Jorhat Lilabari, Dibrugarh, Calcutta, Ranchi, Agra, Varanasi, Khajuraho, Chandigarh, Jammu, Srinagar, Amritsar and Delhi. The results of these inspections have revealed that there have been no violations of safety norms by Indian Airlines by carrying excess passengers.

4. Indian Airlines have already issued instructions on the subject to their Regional Heads warning them that any violation of safety norms like overloading, etc., will be viewed very seriously and that they would be held personally responsible. The Director General of Civil Aviation and the Indian Airlines would continue to conduct surprise checks to ensure strict compliance with safety regulations.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष. महोदय, मंत्री महोदय का वक्तव्य हम सारे सदन को ताज्जुब मे डालने वाला है । उन्होंने केवल एक घटना को स्वीकार किया है, जब कि मैं उन्हे अनेक घटनाये बतलाने वाला हूं जिनमें क्षमता से अधिक यात्री लिये गये । कुछ मामले तो सिविल ऐविएशन डिपार्टमेंट सी० ए० डी० की नोटिस में आ चुके हैं । सदन को गुमराह करने की कोशिश की गई है, सारे तथ्य सामने

नहीं रखे गये हैं। मैं मंत्री महोदय से अभी भी कहता हूं कि वे सारी चीजें सदन के सामने रखें वरना अध्यक्ष महोदय मुझे अन्य नियमों का अवलम्बन कर के आपके सहयोग से सच्चाई का उद्घाटन कराना पड़ेगा

मेरी जानकारी के अनुसार कुछ ही दिन पहले जम्मू श्री नगर उड़ान पर भी अधिक यात्री पाये गये थे। अधिक यात्रियों का एक मामला और हुआ है, जिसमें 4 यात्रियों को बोर्डिंग कार्ड भी दिये गये, लेकिन बाद में पता लगा की सी० ए० डी० की इन्वेस्टीगेशन टीम जांच कर रही है, तो उन यात्रियों को हवाई जहाज में चढने से रोक दिया गया, गायब कर दिया गया। लेकिन रिकार्ड मौजूद है कि 4 यात्रियों को बोर्डिंग कार्ड दे दिये गये थे और वे यात्री अतिरिक्त थे।

दिल्ली में सी० ए० डी० ने स्वयं पता लगाया है कि एक बोइंग की 737 फ्लाइट में 129 यात्री थे। कुल क्षमता 126 है। ये 3 यात्री अतिरिक्त कैसे आये। एक स्टाफ के सदस्य को अधिक यात्री के रूप मे ले जाया जा सकता है, उससे ज्यादा नहीं।

2, ढाई महीने पहले बागडोगरा कलकत्ता उडान पर दो यात्री ज्यादा थे। एक एयर होस्टेस को खड़े रहना पड़ा। उस यात्रा में एक बडे प्रतिष्ठित ट्रेवल एग्जीक्यूटिव सफर कर रहे थे। उन्होंने लिखी हुई शिकायत दी है। या तो मंत्रालय ने मंत्री महोदय को गुमराह किया है' या वह सदन के सामने सारे तथ्यों को नहीं ला रहे है। वह पता लगायें कि बागडोगरा कलकत्ता उडान के सम्बन्ध में कोई लिखित शिकायत आई है या नहीं ?

पटना दिल्ली उडान पर भी एक बार 3 यात्री खड़े हुए आये थे।

मैं मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि क्या यह सच नहीं है कि 7 मार्च को श्रीनगर से जो हवाई जहाज आया, उसमें पार्लियामेंट के एक मम्बर काक पिट में बैठकर आये थे, क्योंकि सीट नहीं थी ? क्या इसकी भी उन्हें जानकारी नहीं है ?

अध्यक्ष महोदय, काक पिट में किसी को बैठाकर नहीं लाया जा सकता। हाई जैकिंग एक बार हो चुका है। सुरक्षा के नियम स्पष्ट है। अगर पाइलट को क्रू भीतर चले जायें तो काक पिट का दरवाजा बन्द होना चाहिये, लेकिन जब यात्रियों को वहां बैठाकर लायेंगे तो सुरक्षा के नियमों का पालन कैसे हो सकता है ?

मंत्री महोदय ने केवल एक घटना मानी है। पटना रांची। मगर पटना रांची के वरिष्ठ मंत्री सदन में नहीं हैं। श्री अनन्त प्रसाद शर्मा वहां विराजमान है इस समय, क्या मैं जान सकता हूं।

एक माननीय सदस्य : काक पिट में हैं।

अध्यक्ष महोदय : मुझे पता है, लेकिन अगर लिखित दे तो और पता करूंगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : लिखकर भेजा है, लेकिन मुझे लगता है कि वह अपने को सदन का सामना करने से बचा गये।

मंत्री महोदय मे एक घटना मानी है, उसमें उन्होंने कहा है कि 7 यात्री ज्यादा थे। मेरी जानकारी है कि 13 यात्री ज्यादा थे। इसका भी फैसला करना है, मगर मैं यह जानना चाहता हूं कि 7 यात्री कहां थे 2 काक पिट में थे और और 5 कैबिन में थे; क्या लैवेटरी में भी कोई था ?

अध्यक्ष महोदय : खुशबू ले रहा होगा ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, यात्रियों को बैठान का एक तरीका बनाया जा रहा है जो बहुत खतरनाक है । आर्म रेस्ट के लिये जो प्रबन्ध है, वे हत्थे हटा दिये जाते है और उसमें अतिरिक्त यात्री बैठाये जाते हैं । हत्थे हटाकर आप सीटें बढा सकते है, मगर कुर्सी पेटी तो नहीं बढा सकते ।

एक माननीय सदस्य : वह भी बढ जाती है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, आप तो विमान में बहुत यात्रा करते है । कुर्सी पेटी बांधो—कुर्सी पेटी बांधो, लगातार यह सूचना दी जाती है । हवाई जहाज उड़ रहा हो तब भी अपनी रक्षा के लिये कुर्सी पेटी बांधे रखो, मगर जब पेटी है ही नहीं, खाली कुर्सी है तो पेटी बांधेगे कैसे ? एक घटना हो चुकी है, कलकत्ता बाडोगरा उड़ान में । उसमें हवाई जहाज अचानक गहरे बादलों में फंस गया । सूचना नहीं दी जा सकी कि आप कुर्सी पेटी बांधिये । उस दिन 15 यात्री घायल हुए थे । अगर यात्री बिना कुर्सी पेटी के बैठेगा, तो यह उस यात्री के लिये भी खतरनाक है और आस पास के यात्रियों के लिये भी खतरनाक है, क्योंकि वह मिसाइल की तरह उड़ सकता है, घायल हो सकता है । अधिक यात्री बैठाने के लिये सुरक्षा के इस नियम की अवहेलना की जा रही है ।

लेकिन ओवर लोडिंग का मामला केवल यात्रियों तक ही सीमित नहीं है, सामान का भी ओवर लोडिंग किया जा रहा है । कुछ हवाई अड्डे ऐसे है, जिनमें सामान ज्यादा आता है, मगर कम बताया जाता है । कर्मचारियों की मिली भगत है ।

एक माननीय सदस्य : नहीं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जरा पता लगाइये । "नहीं" कहने से काम नहीं चलेगा ।

एक माननीय सदस्य : क्या यह जिम्मेदार है, जो नहीं कह रहे हैं ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर सामान कम बताया जायेगा, तो पायलट कम सामान देख कर ज्यादा फ्युअल ले सकता है । लेकिन अगर असलियत में सामान ज्यादा होगा, तो उड़ान खतरे में पड़ेगी । जहां से कालीन लादे जाते है—मैं उन जगहों का नाम नहीं लेता वहां से इस तरह की शिकायतें आई है कि वजन ज्यादा है, मगर दिखाया जाता है कम । क्या इस आशय की शिकायतें मंत्री महोदय को मिली हैं ?

अध्यक्ष महोदय, शर्मा जी यहां नहीं हैं । वह रेलों में काम कर चुके है । उनको बड़ी तमन्ना थी कि उन्हे रेल मंत्री बनाया जाये । मगर वह इच्छा पूरी नहीं हुई ।

एक माननीय सदस्य : क्या आपसे बोले थे ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उनको उड़ाने के लिये विमान दे दिये गये । लेकिन शर्मा जी ने तय कर लिया है कि प्राइम मिनिस्टर चाहे उन्हे रेल मंत्री बनाये या न बनायें, वह हवाई जहाजों को रेलों की तरह चला कर दिखा देंगे । जरूरत से ज्यादा यात्री भरे जा रहे हैं । जरूरत से ज्यादा सामान भरा जा रहा है ।

एक मामला ऐसा है कि एक बिना टिकट यात्री वहां पाया गया । यह सी० ए० डी० ने चेक किया है । मंत्री महोदय इसका पता लगाएं । वह ऊपर कैसे पहुंचा ? जहां तक रांची वाले मामले का सम्बन्ध है :

"The preliminary investigations made into the incident revealed that the flight was inadvertently over-booked ex-Ranchi due to an error by Traffic Assistant at the Ranchi City booking office."

केवल सिटी बुकिंग आफिस पर जांच ?

मैं जानना चाहता हूं कि हवाई अड्डे पर क्या हो रहा था । मान लीजिये कि सिटी बुकिंग आफिस से गलती हो गई, ओवर बुकिंग हो गया, तो हवाई अड्डे पर उसका पता क्यों नहीं लगाया गया ? जब हवाई जहाज पर यात्री चढ़ रहे थे, तो क्या कोई देखने वाला नहीं था ? सात यात्री कैसे ज्यादा चढ़ गए ?

यह साधारण घटना नहीं है । हवाई जहाजों में सुरक्षा के सारे नियम ताक पर रखे जा रहे हैं । हवाई उड़ान एक खतरनाम चीज बन गई है । यात्रियों का मनोबल टूट रहा है । या तो प्रभाव की वजह से--किसी को एकामोडेट करना है, इस लिये---ओवर लोडिंग किया जाता है, या कर्मचारियों के अपने संबंधी है, जिन्हे ले जाना है, या फिर पैसा चल रहा है ।

एक माननीय सदस्य : मनोबल कैसे टूट रहा है ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मनोबल इस लिये टूट रहा है कि सिफारिशवाद चल रहा है । एक अफसर दो साल के भीतर कई सीढ़ियां लांघ कर ---चढ कर नहीं, फांद कर---मैनेजिंग डायरेक्टर हो गया है । अनेक अफसर सुपरसीड कर दिये गये हैं । मैं जानना चाहता हूं कि क्या यह सच है ;

श्री गिरधारी लाल व्यास (भीलवाडा) यह बिल्कुल इर्रेलेवेन्ट है ।

अध्यक्ष महोदय : यह नया स्पीकर कहां से आ गया ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : बुढापे में इतना उत्साह है, यह देख कर सचमुच मुझे रश्क होता है । मैं जवानी में भी ऐसी टोका टोकी नहीं कर सकता था । दांत गिर गये है, लेकिन आंत मजबूत है ।

अध्यक्ष महोदय, इस गंभीर मामले को .....

अध्यक्ष महोदय : इसकी गंभीरता नहीं जायेगी ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इंडियन एयरलाइन्स की उडाने पूरी तरह से सुरक्षित है और सुरक्षा का अर्थ है यात्रियों की सुरक्षा और हवाई जहाज की भी सुरक्षा । लेकिन मेरा निवेदन है कि इस संबंध में जो भी नियम है, उनका पालन नहीं किया जा रहा है । उनमें ढिलाई है । ढिलाई के लिये कौन जिम्मेदार है, इसका आप पता लगाये । मुझे याद है श्री जे आर डी टाटा की अध्यक्षता में एक कमेटी बनी थी जिसने सिफारिश की थी कि एक्सीडेन्ट्स की जांच के लिए कोई इंडेपेन्डेन्ट कमीशन होना चाहिये । एस्टिमेट्स कमेटी ने भी उस सिफारिश के साथ अपनी सहमति प्रगट की है । आज मैं एक्सीडेन्ट्स की बात नहीं कर रहा हूं । एक्सीडेन्टस टल रहे हैं । आपकी वजह से नहीं, यात्रियों की तकदीर उन्हे जिन्दा रख रही है, आप तो उनको मारने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं । मैं जानना चाहता हूं कि एयर लाइन्स

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

की सेफ्टी के सारे पहलुओं पर विचार करने के लिये आप कोई इंडेपेन्डेन्ट कमीशन बनायेंगे ? कोई दुर्घटना हो जाये, फिर आप जांच करें, पोस्ट मार्टम करें . .

अध्यक्ष महोदय : आप पानी आने से पहले बन्धा लगाना चाहते हैं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जितने भी लूप होल्स हैं, नियमों का अगर उल्लंघन हो या ढिलाई हो या कोई भी कारण हो उनकी जांच के लिये कोई कमीशन बनाया जाना चाहिये । लेकिन जब तक इंडेपेडेन्ट कमीशन नहीं होगा तब तक तथ्य सामने नहीं आयेंगे । एक दूसरे की कमियों पर पर्दा डालने का प्रयत्न किया जाता है । इसलिये मैं फिर से कहना चाहता हूं कि आप तथ्यों के बारे में पता लगाये और मैंने जो प्रश्न किये हैं उनका उत्तर देने का प्रयत्न करें ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI KHURSHEED ALAM KHAN): I would like to assure the Hon. Member that we are quite conscious of the safety of the passengers in the aircraft. We are as much conscious of the safety of the passengers as the Hon. Member is and we share his anxiety about it.

I would like to assure the Hon. Member that everything possible is being done and that there is no danger either to the air passengers or to the aircraft.

As regards the matters of promotion and other things, I do not know how these matters come up in this particular Calling Attention.

I have already admitted that, on that particurlar day, seven passengers travelled from Ranchi to Patna in excess of the carrying capacity but they were all accommodated. Two passengers were accommodated on jump seat with proper seat belts and five passengers in the Cabin. There also they were accommodated by removing arm-rests and the seat belts were expanded and they were utilised for . . . . . .

(Interruptions)

You can yourself try and see. As regards the allegation of the Hon. Member that much cargo is being taken without accounting for it, I refute this allegation and, I must say that wherever we have cargo, we always display it or mention it either in the Manifest or in other documents.

In our air-buses, the carrying capacity of cargo is from 7 to 10 tones and this hasnever reached the maximum.

Similarly, in Boeing 737, it is 2 1/2 to 3 tonnes and it has never been reached at any stage to that extent..

As regards the travelling of the crew in addition to the employees of the Airlines, there is a regulation and there is permission that two extra employees can travel in an Air-bus and Boeing 737 while in Avro and Fokker aircraft, anly one employee can travel.

As regards the question raised by the Hon. Member about Bagdogra flight, we have no such complaint from any quarter, nor this complaint has ever been brought to our notice.

The Hon. Member said that from Srinagar to Delhi, some Hon. Member of Parliament travelled in cognito. I do not know. At the same time, I am sure the Hon. Member will agree with me that there is no quesaion of hijacking by an Hon. Member of the House.

(Interruptions)

I do not know if you have ever travelled.

As far as the contentment of the staff of the Airlines is concerned, I assure the Hon. Member that the staff of the Airlines are contended and we are looking to their interests. There

is no such problem. We are as much anxious to look to their contentment and innterests as you are.

This incident of Ranchi happened only once. Before that, nothing has been brought to the notice. But, this has helped us, to a great extent, in making our staff more alert and, as you see, about 7 to 9 stations were checked within a week's time and these surprise checks, with the element of surprise and secrecy, are going to be a sort of regular feature for checking all over. The hon. Member will also agree with me that we carry about 18,000 passengers on an average per day. They are all carried with safety and with comfort. There is no such problem as discomfort to them or any such thing. After all, it is air travel, and in air travel nobody is going to take any kind of risk to the life of the air-passengers or to the aircraft or to the life of the crew.

PROF. MADHU DANDAVATE (Raipur): Had you seen Mr. Malik's despatch of 26th March in the *Times of Indin* and did you contradict that?

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN: About Leh passengers?

PROF. MADHU DANDAVATE: About extra passengers.

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN: Are you mentioning about Leh passengers—from Chandigarh to Leh?

PROF. MADHU DANDAVATE: That is different. That has appeared today. I am referring to 26th March.

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN: I do not know what papers write.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: I had asked whether an independent Commission of Safety would be appointed. He has not given a reply to that.

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN: I do not think there is any need for such a Safety Commission. The DGCA is quite competent enough to carry out this important task which has been assigned to them.

श्री हरिकेश बहादुर : (गोरखपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, वायुयान में यात्रा करना पिछले कुछ वर्षों से बहुत गंभीर हो गया है और खतरे से खाली नहीं है। यह बात मुझे इसलिये कहनी पड़ रही है कि यदि अधिक यात्रियों को वायुयान में ले जाया जायेगा तो उनका जीवन सुरक्षित नहीं रह सकता है। उनका जीवन संकट में पड़ सकता है और ऐसा कई घटनायें पहले भी हो चुकी है। उदाहरण के लिये मैं कहना चाहता हूं कि रांची में पटना फ्लाइट में ....

PROF. N. G. RANGA (Guntur): Is it relevant?

SHRI HARIKESH BAHADUR: I am talking of the most relevant things. You may not consider it relevant. Kindly try to listen.

रांची पटना फ्लाइट में जितने आदमियों को जाना चाहिये था, उससे ज्यादा गये। अभी अखबारों में जो सूचनायें निकली हैं, उनमें यह कहा गया है कि जितने यात्रियों को जाना चाहिये था, कई ऐसे ट्रिप्स पर, उससे अधिक यात्रियों को हवाई जहाज में बैठाया गया। इस बारे में बहुत से उदाहरण श्री वाजपेयी जी ने दिये भी हैं। लेकिन माननीय मंत्री जी ने जवाब में कहा कि उन्होंने इसकी पूरी जानकारी नहीं की है और पहले ही उन्होंने कह दिया ऐसा नहीं हुआ है। अखबारों में जो खबरें निकलती है, बगैर किसी आधार के नहीं निकलती है और मैं चाहता हूं कि उसकी ठीक ढंग से जांच की जानी चाहिये। यात्रियों का वायुयान में यात्रा करना असुरक्षित हो गया है। हवाई जहाज में तेल की जगह पर तेल और पानी का मिश्रण मिलाया जा रहा है, यह घटना बम्बई में हो चुकी है। बम्बई हवाई अड्डा

[श्री हरिकेश बहादुर]

जो कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हवाई अड्डा है, वहां पर भी कोई सुरक्षा नहीं है? यहां तक कि अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों को ले जाने के लिये हवाई जहाज को केबल्स काट दी जाती है, जैसा कि अभी मकालू में हुआ था। इस तरीके से आप देखेंगे कि हवाई जहाजों में कोई सुरक्षा नहीं रह गई है। इतना ही नहीं अभी कुछ दिन पहले 747-बोइंग में, बम्बई में, एक महिला के साथ बलात्कार भी हुआ था। जिसकी खबरें अखबारों में छपी थीं। इससे लग रहा है कि निश्चित क्षेत्र के अन्दर जहां पर कि सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्था होनी चाहिये, वहां सुरक्षा की व्यवस्था नहीं है। बिना टिकट के लोग भी उसके अन्दर प्रवेश कर सकते हैं। जैसा कि माननीय वाजपेयी जी ने भी कहा है। यही वजह है कि इन तमाम हवाई जहाजों की हाईजैकिंग जो होती है, अपहरण किया जाता है। जो अपहरण लखनऊ में हुआ था, उसकी बात मैं नहीं करता, वह तो माननीय मंत्री जी के ही दल के लोगों ने किया था। दूसरा अपहरण पंजाब में खालिस्तान समर्थकों ने किया। इस तरह से अब वायुयान में यात्रा करना उतना ही असुरक्षित हो गया है, जितना कि रेलों में यात्रा करना। आप देखेंगे कि बिहार के अन्दर खास तौर से त्रिमी भी .....

12.30 hrs.

MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*

PROF. N. G. RANGA No.

SHRI HARIKESH BAHADUR: It is not like that—always hijacking is taking place, water is mixed with aviation feul.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Come to the subject.

श्री हरिकेश बहादुर : मैं कह रहा था कि इस तरह से यात्रा सुरक्षित करना नहीं रह गई है यहां तक वायुयान के चलने का समय भी ठीक से फालो नहीं किया जाता, वे समय से नहीं चलते हैं। कल रात मैं बम्बई से आ रहा था। प्लेन को जिस समय चलना चाहिये था उस समय न चल कर 10 मिनट या 15 मिनट बाद चला जब कि मौसम ठीक था। आम तौर से यही होता है कि हवाई जहाज समय से नहीं चलते हैं। ये सारी बातें आज हमारी वायु सेवा के साथ जुड़ी हुई हैं, इन बातों पर मंत्री महोदय को ध्यान देना चाहिये। अब मैं दो-तीन प्रश्न मुख्य रूप से पूछना चाहता हूं और चाहता हूं कि मंत्री महोदय उत्तर दें —

मेरा पहला प्रश्न यह है कि हवाई मार्गों के निर्धारण तथा किराया तय करने के लिये एक स्वतन्त्र संस्था बनाने की बात कई बार उठाई गई है। इस प्रकार की इण्डिपेंडेन्ट बाडी कई अन्य देशों में है जहां पर यात्रियों को काफी लाभ मिला है। यह संस्था कोई "वायु यात्रा परिषद" जैसी संस्था हो सकती है, इस को स्टैचूटरी बनाना चाहिये जैसा कि एअर कारपोरेशन एक्ट, 1953 में कहा गया है। परन्तु अभी तक ऐसा नहीं किया गया। मैं समझता हूं कि इस प्रकार की संस्था बनाने से यात्रियों को कुछ सुविधायें मिल सकती है। यह इस लिये नहीं बनाई जाती क्योंकि इस के बनाने से मंत्रालय के लोगों तथा एअर-लाइन्स के लोगों को कठिनाई होगी, इसीलिये वे हमेशा इस के बनाने में बाधा उपस्थित करते हैं। क्या इस प्रकार की संस्था, जैसा कि 1953 के एक्ट में कहा गया है, बनायेंगे या नहीं?

दूसरी बात—हवाई जहाजों में जो अधिक भीड़ हो जाती है उस को दूर करने के लिये क्या आप विभिन्न वायु मार्गों पर वायुयानों की संख्या बढ़ाने की बात सोचते है या नहीं?

तीसरी बात भीड़ को कम करने के लिये, कुछ रूट्स पर जहां भीड़ ज्यादा होती है, क्या वहां पर प्रतिदिन हवाई जहाज चलाने की व्यवस्था करेंगे ? जैसे गोरखपुर जो हवाई जहाज जाता है वह आल्टरनेट डेज पर आता है, एक दिन छोड़ कर जाता है, क्या आप ऐसी व्यवस्था करेंगे कि वहां प्रतिदिन हवाई सेवा प्रदान की जा उसके ताकि भीड़ से बचा जा सके ?

अंतिम सवाल, क्या एच० एस० 748 (एव्रो) तथा फोकर फ्रेण्डशिप की जगह एअर-बस या बोइंग 737 चलाने की व्यवस्था करेंगे ? ऐसा निर्णय हुआ था कि 1982 से धीरे-धीरे इन्हें घटाया जायेगा और उनकी जगह एअर-बस तथा बोइंग 737 लगायेंगे।

एअर कारपोरेशन एक्ट, 1953 के चैप्टर 2 में कहा गया है —

To secure that the services are provided at reasonable charges.

जो प्रश्न मैंने सब से पहले पूछा है—क्या कोई ऐसी स्टेचूटरी बाड़ी बनाने जा रहे हैं या नहीं ?

श्री खुर्शीद आलम खान: माननीय सदस्य ने बहुश ही अच्छी भूमिका बनाई सवाल पूछने से पहले, और उस में कुछ ऐसी चीजें भी ले आयें जिन से इस का कोई ताल्लुक नहीं था, किसी के साथ कुछ हुआ, किसी के साथ कुछ हुआ, लेकिन हमें तो ऐसी कोई बात मालूम नहीं है, उन को कैसे पता चल जाता है मैं कह नहीं सकता।

MR. DEPUTY-SPEAKER: He has put three specific questions.

श्री खुर्शीद आलम खान : मैं इन की भूमिका का थोड़ा सा जवाब दे रहा था। जहां तक सुरक्षा का ताल्लुक है खुद माननीय सदस्य हमेशा हवाई जहाज से सफर करते है, रेल से सफर नहीं करते है, ये बिल्कुल सुरक्षित है और सुरक्षित रहेंगे। जहां तक आपने कौन्सिल बनाने का जिक्र लिया, यह मामला विचाराधीन है। हम जरूर सोच रहे है कि एक ऐसी एअरट्रांस्पोर्ट कौन्सिल के मामले पर गौर करें कि इस को बनाया जा सकता है या नहीं। लेकिन जो हमारी कन्सलटेटिव कमेटी इस वक्त मौजूद है उस के अन्दर ये तमाम चीजे आती रहती हैं और उस में जो सुझाव दिये जाते है जैसे कहीं पर सर्विस बढ़ाने का सुझाव दिया जाता है या कहीं पर बड़ा जहाज लगाने का सुझाव दिया जाता है उन पर गौर किया जाता है और करने की कोशिश की जाती है।

जहां तक गोरखपुर का सवाल है, वह भी विचाराधीन है उस पर गौर किया जायेगा। मैं वाजपेयी जी को एक बात जरूर बताना चाहता हूं कि जहां तक सुरक्षा का ताल्लुक है, हमने रांची के मामलें में फौरन ही एक्शन लिया है और मैं समझता हूं कि उन को यह जान कर संतुष्टि होगी, खुशी होगी कि जहां तक इस का ताल्लुक है, एयरक्राफ्ट का कैप्टेन जो था उस को ससपैंड किया जा चुका है, स्टेशन मैनेजर को ससपैंड किया जा चुका है और उस टैफिक एसिसटैंट को ससपैंड किया जा चुका है, जिस ने सिटी बुकिंग आफिस में ज्यादा बुकिंग कर दी थी। इतना प्रोम्प्ट एक्शन लेने के बाद आप को किसी तरह की आशंका नहीं होनी चाहिये कि हम या अधिकारी आप की सुरक्षा या हवाई जहाज और दूसरे लोगों की सुरक्षा के प्रति जागरूक नहीं हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इतने ज्यादा यात्रियों को ले कर हवाई जहाज उड़ा कैसे ?

श्री खुर्शीद आलम खान : इसलिये तो उन के खिलाफ एक्शन लिया गया है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर दुर्घटना हो जाती, तो कौन जिम्मेवार था ?

श्री खुर्शीद आलम खान : दुर्घटनाएं तो कभी भी हो सकती है लेकिन क्योंकि उन्होंने कानून का उल्लघंन किया था इस वजह से उन को ससपैंड किया गया है और उन के खिलाफ कार्यवाही की जा रही है और उन को सख्त से सख्त सजा दी जायेगी ।

SHRI HARIKESH BAHADUR: Sir, my very important question has not been replied namely whether he was going to increase the number of planes on the crowded routes.

श्री खुर्शीद आलन खान : कैपेसिटी बढाने की कोशिश की जा रहेगी है और बहुत जल्दी और कैपेसिटी बढ सकेगी ।

SHRI KAMAL NATH (Chhindwara): Sir, the Minister has already elaborated his explanation and has answered in response to my predecessors' Calling Attention Motion.

The Indian Airlines is the single carrier operating in the country. I do not think that it should abuse this advantage which it has and run its fleet like some Road Transport Corporation. I also think the Civil Aviation Authorities are taking the term Air bus a little too seriously and literally and are thinking that this is a part of the Delhi Transport Corporation family. We are all concerned about the profits of Indian Airlines. But, compulsion of profits should not overshadow the safety factors which are necessary.

Sir, the aircraft is not like a bullock-cart that if you pull its tail more luggages can be loaded. The aircraft is a highly scientific and technical machine. There is a well calculated ratio between the passenger section and the luggage section.

Some years ago, when there was a Caravalle air-crash in Bombay, there was an enquiry made. One of the findings of that Committee which enquired into the aircraft crash was that there was a fire at the end where the engine was. Passengers from the rear portion rushed to the front. So, the weight ratio changed and the centre of gravity shifted to the front and the plane nose-dived. These are the critical factors in an aircraft and in a plane which flies.

In the past, there have been cases where somebody entered the cockpit. The question is not what can be done—the question is not what is feasible. The question is what is the legal requirement. The legal requirements have been made on the basis of a very great and detailed study by the various authorities and manufacturers of aircraft all the world over.

On 9th February this year I myself was coming to Delhi from Nagpur and when I boarded the plane, I found that there was a waiter coming from the restaurant at Nagpur airport and was carrying some cold drinks—carrying some Thums up and Campa Cola or whaever it was carrying some aerated waters. But when the passengers boarded, and were moving forward, the waiter dropped the aerated water and all the other bottles he had in his hands on the seat. Sir, the plane was found full that day. This was on 9th February. I request the Minister to make a note of this. The fight was absolutely full. The flight had come either from Madras or Hyderabad. Since the seat got entirely wet a passenger had to come standing. So,

here it is not a question of over-loading but a question of total chaos in the flight.

Sir, the Minister has said that it is an admitted fact that the passengers were in the cockpit. I remember clearly one case in the past when a passenger was found in the cockit a prosecution was launched immediately. This happened three to four years ago. The concerned pilot was summarily prosecuted. Now, it is an admitted fact that it has happened on such and such date. There is no dispute about it. Sir, every aircraft before it is airborne a load and a trim sheet is prepared which is handed over to the Captain before take off. I would like to know whether in this load and trim sheet which was prepared it was mentioned that there were seven extra passengers because the pilot calculates so many things concerning flying based on this load and trim sheet. So, what was contained in the load and trim sheet? If this excess load was not mentioned in the load and trim sheet then it was not only very dangerous but fortunate that the flight did not crash. Based on this sheet the pilot calculates what power and speed he has to give to the engines. So my point is whether it was there.

Sir, the Minister has explained that an inquiry has been instituted. What is the need for an inquiry when the Minister himself has stated that all this inquiry report come and what action thereafter is proposed to be taken?

Sir, in response to another question the hon. Minister has said that two passengers were accommodated with one seat belt. Sir, for a critical thing like the seat belt it is written that it has been certified to carry such and such stress and strain. So, it is not a question that you can have five people in one belt. The question is not what you can do but the question is what you can legally do. My specific question that is since the seat belt has a certified load whether that certification has been met.

MR. DEPUTY-SPEAKER: A bachelor like Mr. Vajpayee may not object to two put together.

SHRI KAMAL NATH: Sir, then the plane would not take off.

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN: Sir, I am grateful to the hon. Member for making so many searching questions but one thing I would like to assure him that we do not treat the aircraft—as he said—like the DTC bus Sir, if comparison like this is made then it will mean running down our own organisation.....

SHRI KAMAL NATH: Sir, I only said it appears that you are taking it too far and making it....

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN: I think you are stretching your imagination too far.

SHRI KAMAL NATH: I am praising DTC.

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN: We do not want ourselves to be compared with DTC.

MR. DEPUTY SPEAKER: The Minister's point is that in the bus you can travel even above the bus whereas in the aircraft you cannot. So, you do not compare the bus with the aircraft.

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN: Sir, it is an admitted fact that there were seven passengers extra in the flight. Even the Pilot has himsetlf admitted it. Therefore it has been possible for us to initiate immediate action. But it will be natural justice to give him a formal notice and to wait his reply. Thereafter immediate action will be taken. It will not take very long.

As I have stated already, the pilot has been suspended.

SHRI KAMAL NATH: What about the Traffic Assistant?

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN: He was suspended. Pilot has been suspended. The Co-pilot has been warned. The Station-in-charge has been suspended.

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN:

(An hon. Member: Why can't the Minister be suspended?) We always adhere to the specifications laid down by the Manufacturers in all respects regarding safety and otherwise...

SHRI KAMAL NATH: Regarding seat-belt certain restrictions are there.

SHRI KHURSHEED ALAM KHAN: They are not used for three persons and all that. And, on this particular day, fortunately we had 40 Japanese small people who came there and they were all accommodated; it was possible for us to accommodate them.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) DISCONTENTMENT AMONGST TRIBALS IN HILLY TRACKS OF MAYURBHANJ DISTRICT OF ORISSA.

SHRI MANMOHAN TUDU (Mayurbhanj): Mr. Deputy Speaker, Sir, I invite the attention of the Hon. Minister of Agriculture towards the growing discontentment arising among the thousands of tribals inhabited in the hillly tracks of Mayurbhanj District of Orissa. The removal of dead tree-trunks and branches from the Similipal Hill Forests of Mayurbhanj District by the Simillipal Forest Development Corporation has reduced the availability of wild mushrooms eaten extensively by the Tribals.

The simple Tribals living in remote hamlets situated in the foothills of Similipal have, other the years, acquired the habit of consuming "wild mushrooms' growing on dead tree-trunks and branches. They collect these mushrooms from the Hill Forests, they crush them into power and preserve them for their future use. These poor Adivasis thereby get the most nourishing Protein Food from such mushrooms growing in the forest. They eat the mushrooms along with rice,—especially during the rains,—when no other vegetable is available.

In the Similipal Hill Forests, some important strains of wild mushrooms grow abundantly. 'Marchella' is one of them and it is known for its fine taste and flavour. The dry 'Marchella' has got a big demand in the international market and it is sold for as much as Rs. 500/- a K.G. India exports this variety of mushrooms, worth about Rs. 28 lakhs a year. They play an important role in the forest eco-system and act as a medium in the conversion of fresh leaf and litter, into palatable and nutritive mushrooms locally known as 'Nada-Chhatu' or 'Parab Chhatu'.

With the removal of all dead, decaying and fallen tree-trunks and branches by the Similipal Forest Development Corporation, the Forests will be deprived of the natural fungus beds which help in the growth of many rare and priceless wild mushrooms. The dead and decaying tree-trunks and branches do not endanger the forest in any way. On the other hand, they serve as the base material for the natural growth of the Protein and Vitamin-rich food for the local Tribals.

The removal of these base materials from the forest will also affect the genetic pool, on which so much research is being carried out. Apart from affecting the forest eco-system, the utilisation of the base material, as firewood, will also eliminate some rare species of wild mushrooms, which have immense medical proportions. In view of this, I demand that that immediate steps should be taken to stop the removal of dead tree-trunk and branches from the Simpilipal Hill forest of Orissa by the Similipal Forest Development Corporation.

(ii) CONSTRUCTION OF RAILWAY LINE FROM MANKHURD TO BELAPUR AND ADDITIONAL SUBURBAN LINES BETWEEN BANDRA AND ANDHERI.

SHRIMATI USHA PRAKASH CHOUDHARI (Amravati): The metropolis of Bombay with an expanding population is faced with a serious mass transportation problem. To alleviate the situation, proposals were made to the Minister of Railways, as a beginning, to construct an additional pair of suburban railway lines between Bandra and Andheri and the